Schilimann

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-VIII, Sem. – II

19 वीं शताब्दी के दुसरे चरण में पुरातत्ववेत्ताओं में Schilimann महोदय का महत्वपूर्ण स्थान है । उसके पहले पुरातत्व सम्बन्धी कार्य वैज्ञानिक ढंग से नहीं होते थे बल्कि उसकी बुनियाद साहित्य पर निर्भर थी परन्तु Schilimann महोदय ने पुरातत्व को साहित्य के चक्कर से निकाला और उसे वैज्ञानिक बुनियादों पर रखा । वह पहला पुरातत्ववेत्ता था जिसने एक अच्छी पद्धति पर केवल ज्ञान के लिए खुदाई करवायी ।

प्रो. सायसी के अनुसार आधुनिक पुरातत्व की शुरुआत Schilimann से होती है । वह पहला पुरातत्वशास्त्री था जो एक सिद्धान्त के उपर खुदाई का कार्य संपन्न करवाया । पुरातत्व के तकनिकी उन्नति में Schilimann की क्या देन थी । इस पर विद्धानों में कुछ मतभेद है । Cassian महोदय ने इसे वैज्ञानिक सिद्धान्तों का जन्मदाता कहा है और उसके उत्खनन सम्बन्धी सिद्धान्त किसी भी देश में अपनाये जा सकते है ।

परन्तु श्री माइकल ने दूसरी ही बात कही है उनके अनुसार Schilimann वैज्ञानिक सिद्धान्तों को बिलकुल नही जनता था परन्तु कारो महोदय ने बीच का रास्ता अपनाते हुए ऐसा कहते है कि कोई भी ऐसा आदमी जिसे जहाँ भी पुरातत्व सम्बन्धी कार्यों का अनुभव होगा वह Schilimann और उसकी पत्नी की देन को नही भूल सकता है । उन लोगों ने पुरातत्व में किसी भी प्रकार की training के बिना उस समय जो सुविधाएँ प्राप्त थी । उन्ही के द्वारा बहुत ही महत्वपूर्ण वस्तुओं को प्रकाश में लाया ।

Schilimann द्वारा हिस्सार नामक स्थान पर की गई खुदाई को tell की पहली खुदाई मानते है । Stratigraphy के सिद्धान्त पर उसने पहली बार उत्खनन करवाया । उनके पहले डेविस पुरातत्ववेताओं ने Geological stratigraphy को Pre-historic Archaeology में relative chronology जानने का एक कुंजी बताया है । Schilimann के इस सिद्धान्त को हिस्सार के डीह पर प्रयोग करके दिखा दिया । उसके पहले वहाँ आई हुई जो समस्याएँ थी उसको उसने इसके आधार पर समाधान करने की चेष्टा की ।

डेनियल के अनुसार Schilimann के द्वारा किये हुए कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है । पहला काल 1870 से 1882 के बीच का तथा दूसरा काल 1882 से लेकर उसकी मृत्यु तक और इस दुसरे चरण में डॉफिल्ड द्वारा उसे भरपूर सहायता मिली ।

ट्राय में पहले साल (1871-73) की खुदाई में वह अपनी पत्नी के साथ अकेला था । माइसिन (Mycene) ने 1874 - 76 के खुदाई के बीच उसके साथ यूनानी साथी थे जिन्होंने उसकी बहुत कम सहायता की। ट्राय में जब दूसरी बार खुदाई शुरू हुई जो 1879 में प्रारंभ हुई। उसमें उसकी सहायता के लिए Virchow और Burnouf थे, 1882 और उसके बाद डॉफिल्ड उसके साथ रहा । डॉफिल्ड एक Practical Architect था जिसने ओलम्पिया में कार्टीयस महोदय के साथ काम किया था । काम करने की लगन से ही प्रेरित होकर ही वह Schilimann के पास आया था । उसने Schilimann के पुराने तकनीक में नए युग का श्रीगणेश किया और stratigraphy को पहले से अधिक अच्छी तरह प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया । मार्यस महोदय के अनुसार He changed the technique from digging to dissection । पर ऐसा नहीं समझना चाहिए की कि Schilimann ने सारी बातें कार्टीयस या डॉफिल्ड से ही सीखी थी । डॉफिल्ड के आने के पहले वह कुछ सिद्धान्तों के अनुसार ही खुदई करवाता था जो अच्छे खुदाई की पहचान है । उसे खुदाई में जो भी वस्तु मिलती थी उसका रिकॉर्ड भली भांति तैयार करते हुए प्रत्येक महत्वपूर्ण वस्तुओं को जितनी जल्दी हो सके drawing & photography करवाता था ।

Schilimann ने अपनी खुदाइयों का विवरण एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया परन्तु Schilimann द्वारा जो काम किये गए उसमें section और Plan का concept नहीं था । Croford के अनुसार यदि हम उसके अप्रकाशित नोटों का अध्ययन करें to मालूम होगा वह उन प्रत्येक बातों पर ध्यान रखता था जो एक पुरातत्ववेता के लिए आवश्यक है जैसे स्तरीकरण का सिद्धान्त । परन्तु साथ ही साथ Schilimann द्वारा किये गए कार्यों की समीक्षा अगर हम आधुनिक सिद्धान्त पर करते है तो हमें उसके द्वारा किये गए कार्य premitive (अविकसित) लगेंगे । परन्तु अगर हम Schilimann के पहले के कार्यों से उसके समय में किये गए का तुलना किया जाये तो ऐसा लगेगा की Schilimann के सिद्धान्त कितने उन्नतशील थे ।

कितनी भी सराहना क्यों न की जाये Croford के शब्दों में कुछ हद तक यह मानना पड़ेगा कि Schilimann किताबों के प्रभाव से बाहर नहीं निकला था । उसका कहना है की Schilimann इलियट के मशहूर स्थानों से प्रभावित था । उसने उसी काल के अवशेषों को प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया । यह बात ठीक ही है कि इतिहास प्रसिद्ध स्थानों को खोदा जाये और उन अवशेषों के आधार पर इतिहास की रचना हो । परन्तु साथ ही यह भी आवश्यक नहीं कि हम इतिहास में वर्णित स्थानों पर ही केन्द्रित हो जाये क्योंकि जैसा हम जानते है कि पुरातत्व में मुख्य कार्य सामान्य वर्ग के रहन - सहन के विषय में जानना है ।

जो भी हो इतना तो मानना पड़ेगा कि Schilimann ने आधुनिक पुरातत्व शास्त्र की ओर एक सफल कदम बढाया था । उसने जो भी खुदाईयां करवाई उसमे प्रत्येक वस्तु का recording और stratigraphical नियम पर जोड़ दिया । Schilimann को कुछ लोग अनजान बताते है परन्तु वही बात फिर सामने आती है कि उसके पहले के कार्यों से उसकी तुलना करें तो मानना पड़ेगा की “He should be regarded as the one of the founder of Modern Archaeological Method”.